1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य समाज 150 स्वर्णिम वर्ष – मानव सेवा के – 1875 ~ 2025

वर्ष 48, अंक 26 — एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 अप्रैल, 2025 से रविवार 27 अप्रैल, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 — सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 — पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये — दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

पहलगाम में आतंकियों द्वारा धर्म पूछकर 28 लोगों की गोली मारकर नृशंस हत्या

मृतकों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं परिजनों के प्रति हार्दिक संवेदना

धर्मान्ध आतंकियों पर कठोर कार्रवाई की मांग करता है - आर्यसमाज

हिन्दुओं की हत्या से पूरे देश में भारी रोष : रविवार को सब आर्य समाजों में आयोजित होगा आक्रोश दिवस

अक्सर यह कहा और सुना जाता है कि आतंकियों का कोई धर्म नहीं होता, किन्तु आतंकी जब छल-छद्म से धर्म की पहचान करके मासूम बेगुनाह नागरिकों के ऊपर गोलियां बरसाए और उन्हें अकस्मात मौत के घाट उतार दें, तो इसे एक मजहबी लोगों द्वारा धर्म अथवा वर्ग विशेष के ऊपर क्रूर प्रहार नहीं कहेंगे तो फिर क्या कहेंगे? कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को दिनदहाड़े हिन्दू पर्यटकों का नाम पूछकर, उनके हिन्दू धर्म की पहचान करके गोली मारकर 28 निर्दोष लोगों की हत्याएं की गई, आर्य समाज इस कायरतापूर्ण जघन्य अपराध की घोर निंदा करता है, मृतकों के प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिजनों के लिए हार्दिक शोक संवेदना व्यक्त करता है, साथ ही भारत सरकार से आर्य समाज की मांग है कि इन धर्मान्ध आतंकियों को शीघ्र अति शीघ्र खोजकर उनके ऊपर इतनी कठोर कार्रवाई की जाए कि भविष्य में कश्मीर ही नहीं पूरे भारतवर्ष में कहीं भी ऐसी दर्दनाक घटना-घटित होने न पाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य)

आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के कुछ अति विशेष प्रकाशन

आइए, साहित्य प्रकाशन में सहभागी और सहयोगी बनें

वर्तमान में गतिशील कालखंड सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए प्रेरणाप्रद, ऐतिहासिक और गौरवान्वित करने वाला है। क्योंकि आज आर्य समाज एक नए युग की ओर आगे बढ़ रहा है। आर्य समाज के संस्थापक और महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष और आर्य समाज स्थापना के 150वें वर्ष को लेकर चहुं ओर अत्यन्त उत्साह का वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा है। भारत के कोने-कोने में और विदेशों में यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण का सतत प्रवाह चल रहा है। बड़े-बड़े राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्य सम्मेलन, आर्य महासम्मेलन और प्रचार-प्रसार तथा विस्तार के विविध कीर्ति स्तंभ स्थापित हो रहे हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं के अनुरूप आर्य समाज के सिद्धान्त, मान्यताओं और परंपराओं को जन- जन-तक पहुंचाने के विश्व स्तर पर अभियान चलाए जा रहे हैं। इसी अनुक्रम में आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष पर अत्यंत महत्वपूर्ण और अति विशेष पुस्तकों के प्रकाशन किए जा रहे हैं।

क्योंकि किसी भी संगठन का प्राण उसके ऐतिहासिक प्रेरक तथ्यों में और साहित्य में समाया होता है, तभी तो महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रमुख शिष्य पंडित लेखराम. जी ने कहा था कि आर्य समाज की ओर से लेखन का कार्य लगातार चलता रहना चाहिए, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से लेकर आर्य समाज के विद्वानों, संन्यासियों, चिंतकों, लेखकों और कवियों ने वैदिक साहित्य के रूप में हजारों, लाखों पुस्तकों का निर्माण करके मानव समाज को सत्य की राह दिखाई।

बन्धुओ, आज आर्य समाज जब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जयन्ती वर्ष और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष को हर्षोल्लास से मना रहा है, तब हमें कुछ विशेष पुस्तकों के प्रकाशन में बढ़-चढ़ कर आगे आना चाहिए। इसके लिये यह आवश्यक नहीं है कि आप मान्यता प्राप्त लेखक ही हों, इसके लिए आपकी केवल दृढ़ इच्छा शक्ति होनी चाहिए और आप अपनी सरल भाषा में ही निम्नलिखित विषयों पर आधारित लेख, ऐतिहासिक तथ्य, आर्य समाज की संस्थाओं के विषय में जानकारी, संस्मरण एवं श्रद्धांजलि तथा ज्ञान ज्योति पर्व आयोजन स्मारिका, आर्य सन्देश विशेषांक में लेख आदि का सहयोग करके सहभागी बने।

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

इस विषय में सभी आर्यजन अपने या अपने परिवार के पहले पहल आर्यसमाजी बनने की रोचक घटना और कारण को लिखकर अवश्य भेजें। सर्वश्रेष्ठ 150 घटनाओं की ऐतिहासिक पुस्तक का प्रकाशन किया जाएगा। रचना अधिकतम 500 शब्दों में ही लिखकर भेजें।

आर्य समाजी जेलों में

इस पुस्तक में उन सभी नामों का संकलन करने का विचार है, जो आजादी के आन्दोलन में, हैदराबाद सत्याग्रह में, हिन्दी सत्याग्रह में, गौरक्षा आन्दोलन में, सिन्ध सत्यार्थ प्रकाश सत्याग्रह, पटियाला केस आदि में समर्पित महानुभाव - जिनको किसी भी सज्जन का नाम पता लगे-किस जेल में गए थे- किस कारण से गए थे तो शीघ्र ही अवश्य लिखकर भेजें।

आर्य समाज Today

वर्तमान आर्य समाज की संस्थाओं की सटीक जानकारी एक स्थान पर एकत्र करने हेतु। इस विशेष प्रकाशन को किया जा रहा है, इससे पूर्व आर्य संस्थाओं से जुड़ी जानकारियों का प्रकाशन शताब्दी समारोह के समय किया गया था। समस्त आर्य समाजें अपने समाज की गतिविधियों सहित विशेष जानकारियां अवश्य भेजें।

संस्मरण एवं श्रद्धांजलि

अपने आत्मीय महानुभावों का स्मरण, अपने पूज्य माता-पिता/गुरु/आचार्य जिन्होंने आपके जीवन में आर्यसमाज का प्रकाश करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनको श्रद्धांजलि देते हुए परिचय फोटो सहित। ये प्रकाशन सहयोग राशि के साथ होगा। इसका एक भाग लगभग - 400 पृष्ठ का होगा।

एक पृष्ठ पर एक परिचय 5000/- रूपये की अल्प राशि से प्रकाशित होगा - दो प्रतियां निःशुल्क दी जाएंगी।

ज्ञान ज्योति पर्व आयोजन स्मारिका

200वीं जयन्ती और 150वें स्थापना दिवस के देश-विदेश में हुए विशेष आयोजनों की संक्षिप्त रिपोर्ट, फोटोग्राफ्स, प्रमुख व्यक्तियों के भाषण, विशेष घटनाएं आदि का संग्रह, प्रकाशन करना इस प्रकाशन का उद्देश्य रहेगा।

आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर आर्य सन्देश विशेषांक हेतु ऐतिहासिक लेख एवं घटनाक्रमों पर आधारित प्रेरक प्रसंग अवश्य भेजें

उपरोक्त ऐतिहासिक प्रकाशनों से जुड़ी जानकारी, लेख एवं अन्य सामग्री डाक/ईमेल अथवा व्हाट्सएप्प पर शीघ्र-अतिशीघ्र भेजें-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 - हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Email : aryasabha@yahoo.com; 9540097878

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

21 अप्रैल, 2025
से
27 अप्रैल, 2025

देववाणी-संस्कृत

प्रभु के बुद्धियोग से जीवन-यज्ञ में सफलता

वेद-स्वाध्याय

यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन। स धीनां योगमिन्वति।।
–ऋ॰ 1।18।7

ऋषिः- काण्वो मेधातिथिः।। देवता-सदसस्पतिः।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ-यस्मात् ऋते=जिस प्रकाशक प्रभु के बिना **विपश्चितः चन**=बड़े-बड़े बुद्धिमान् विद्वानों का भी **यज्ञः**=यज्ञ **न सिध्यति**=सिद्ध नहीं होता **सः**=वह प्रभु **धीनां योगं इन्वति**=बुद्धियों के योग में व्याप्त हो जाता है।

विनय- हममें से बहुत-से लोगों को अपनी विद्वत्ता का-अपनी बुद्धि का-बहुत अधिक अभिमान होता है। वे समझते हैं कि वे अपनी विद्वत्ता व चतुराई के बल पर प्रत्येक कार्य में सिद्धि पा लेंगे। उन्हें अपने बुद्धि-बल के सामने कुछ भी दु:साध्य नहीं दीखता, परन्तु उन्हें यह मालूम नहीं कि बहुत बार उन्हें जिन कार्यों में सफलता मिलती है, वह इसलिए मिलती है कि अचानक उस विषय में उनकी समझ (बुद्धि) प्रभु के बुद्धियोग के अनुकूल होती है। वास्तव में तो इस जगत् का एक-एक छोटा-बड़ा कार्य उस प्रभु के योगबल (बुद्धियोग) द्वारा ही सिद्ध हो राह है। हम मनुष्यों की बुद्धि जब प्रभु के बुद्धियोग के अनुकूल (जान-बूझकर अनुकूल होती है या अचानक) होती है तब हमें दीखता है कि हमारी बुद्धि से किया कार्य सफल हो गया, परन्तु अचानक हुई अनुकूलता के कारण हमें अपनी सफलता का जो अभिमान हो जाता है, वह सर्वथा मिथ्या होता है। वह हमें केवल ध ोखे में रखने का कारण बनता है और कुछ नहीं, परन्तु जो जानबूझकर प्राप्त की गई अनुकूलता होती है वही सच्ची है। यदि मनुष्य अपने कार्यों की सिद्धि चाहता है- अपने कार्यो को सफल-यज्ञ बनाना चाहता है, तो उसे यत्नपूर्वक अपनी बुद्धि को प्रभु से मिलाना चाहिए, अपनी बुद्धि का प्रभु में योग करना चाहिए। हमारी बुद्धि प्रभु से युक्त हो गई है-उसकी बुद्धि से जुड़ गई है या नहीं यह पूरी तरह से निर्णीत कर लेना तो हम अल्पज्ञ पुरुषों के लिए सदा सम्भव नहीं होता, हमारे लिए तो इतना की पर्याप्त है कि हम युक्त करने का यत्न करते जाएँ। प्रभु सत्यमय हैं, अत: हमारी बुद्धि सदा सत्य और न्याय के अनुकूल ही रहे (हमारे ज्ञान में जो कुछ सत्य और न्याय है, बुद्धि उसके विपरीत कोई भी निर्णय न करें। यह यत्न करना ही पर्याप्त है। हमारी बुद्धि के प्रभु से योग करने का यत्न जब परिपूर्ण हो जाता है, अर्थात् इस योग में प्रभु व्याप्त हो जाते हैं, तभी वह कार्य सिद्ध हो जाता है, अत: हमें अपनी बुद्धियों का अभिमान छोड़कर, हमारे यज्ञ-कार्य में जो बड़े प्रसिद्ध विद्वान् लोग हैं उनके बुद्धिबल पर भरोसा करना छोड़कर, नम्र होकर अपनी बुद्धियों को सत्य और न्याय-तत्पर बनकर प्रभु से जोड़ने का यत्न करना चाहिए। हम चाहे कितने बुद्धिमान हों, परन्तु हमें सदा अपनी बुद्धि प्रभु से जोड़कर रखनी चाहिए। प्रभु के अधिष्ठान के बिना कोई भी यज्ञ-कार्य सफल नहीं हो सकता।

-:साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पहलगाम में आतंकियों ने की 28 लोगों निर्मम हत्या

अप्रैल की दोपहर करीब 2 बजे, जगह- कश्मीर के पहलगाम की बैसरन घाटी। देश के अलग-अलग राज्यों से 40 से ज्यादा लोगों का ग्रुप यहां घूमने आया था। सभी टूरिस्ट खुले मैदान में थे। आसपास ही 4 से 5 छोटी-छोटी दुकानें हैं। कुछ टूरिस्ट दुकानों के बाहर लगी कुर्सियों पर बैठ गए। कुछ टूरिस्ट आसपास मैदान में बैठे थे। तभी जंगल की तरफ से दो नकाबपोश आए। उन्होंने एक टूरिस्ट से नाम पूछा। टूरिस्ट ने अपना नाम बताया। जंगल से आए लोगों में से एक टूरिस्ट की ओर इशारा करके बोला- ये मुस्लिम नहीं है। इसके बाद पिस्टल निकाली और टूरिस्ट के सिर में गोली मार दी। करीब 10 मिनट तक गोली चलाते रहे। टूरिस्ट्स और दुकानदारों को समझ आ गया कि ये आतंकी हमला है, शुरुआत में एक टूरिस्ट के मरने की खबर आई। अगले दिन सुबह तक संख्या 28 हो गईं परंतु गजब की धर्मनिरपेक्षता है इस देश में अगर ढाबा मालिक का नाम पूछ लो तो साम्प्रदायिक हो जाते हैं, वो नाम पूछकर गोली मार दें तो भी आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता? शायद मरने वालों का बस यही अपराध था। आतंकियों ने राज्य नही पूछा, जाति नहीं पूछी, भाषा भी नहीं पूछी, सिर्फ़ धर्म पूछा और मार डाला।

पहलगाम हमले को लेकर जो वीडियो और फोटो सामने आ रहे हैं, उन्हें देखकर इंसान तो क्या पत्थर भी रोने लगे। इस तस्वीर में जमीन पर पड़ा शख्स है इंडियन नेवी का एक युवा अधिकारी लेफ्टिनेंट विनय नरवाल। इसी महीने की 16 अप्रैल को ही उनकी शादी हुई थी। वे हनीमून के लिए पहलगाम गए थे। हमले में उनकी पत्नी बच गईं लेकिन विनय को इस्लामिक आतंकियों ने गोली मार दी। उनकी बगल में पत्नी को बैठे देखा जा सकता है। इस तस्वीर को देखकर शायद ही संवेदना के लिए शब्द मिले। लाश के पास में बैठी विनय नरवाल की पत्नी दर्द, निराशा के साथ उस गम में डूबी है जहाँ विनय के साथ उसके सभी सपने मर गए। लेफ्टिनेंट विनय नरवाल हरियाणा के रहने वाले थे। उनकी पोस्टिंग कोच्चि में थी। शादी के बाद उन्होंने पत्नी के साथ पहली बार कश्मीर जाना चुना। लेकिन सिर्फ तीन दिनों में ही आतंकियों ने इस नवविवाहित जोड़े को हमेशा के लिए अलग कर दिया।

पहलगाम हमले को लेकर जो वीडियो और फोटो सामने आ रहे हैं, उन्हें देखकर इंसान तो क्या पत्थर भी रोने लगे। इस तस्वीर में जमीन पर पड़ा शख्स है इंडियन नेवी का एक युवा अधिकारी लेफ्टिनेंट विनय नरवाल। इसी महीने की 16 अप्रैल को ही उनकी शादी हुई थी। वे हनीमून के लिए पहलगाम गए थे। हमले में उनकी पत्नी बच गईं लेकिन विनय को इस्लामिक आतंकियों ने गोली मार दी। उनकी बगल में पत्नी को बैठे देखा जा सकता है। इस तस्वीर को देखकर शायद ही संवेदना के लिए शब्द मिले। लाश के पास में बैठी विनय नरवाल की पत्नी दर्द, निराशा के साथ उस गम में डूबी है जहाँ विनय के साथ उसके सभी सपने मर गए। लेफ्टिनेंट विनय नरवाल हरियाणा के रहने वाले थे। उनकी पोस्टिंग कोच्चि में थी। शादी के बाद उन्होंने पत्नी के साथ पहली बार कश्मीर जाना चुना। लेकिन सिर्फ तीन दिनों में ही आतंकियों ने इस नवविवाहित जोड़े को हमेशा के लिए अलग कर दिया।

केवल विनय की पत्नी के ही नहीं, सेना की वर्दी और नकाब पहने आतंकियों ने टूरिस्टों से नाम पूछे, पहचान पत्र चेक किए, कलमा पढ़वाया, पैंट तक उतरवाया और जो मुसलमान नहीं थे, उन्हें गोली मार दी। कर्नाटक के कारोबारी मंजूनाथ घूमने आए थे। उन्होंने घटना से पहले एक वीडियो भी बनाया लेकिन उन्हें नहीं पता था आगे क्या होगा। मंजूनाथ की पत्नी ने क्रूरता को बयां किया है। पल्लवी के सामने ही आतंकियों ने उनके पति को गोली मार दी। जब पल्लवी ने आतंकियों से कहा, मेरे पति को मार दिया, मुझे भी मार दो। इस पर आतंकी बोले, तुम्हें नहीं मारेंगे, जाओ मोदी को बता दो।

आप सोच भी सकते हैं कि पाकिस्तान में कोई हिन्दू किसी मुसलमान को इस कारण मार दे कि वह मुसलमान है, सोचिए अमेरिका में किसी ईसाई को कोई इस कारण मार दे कि वह ईसाई है, जापान में किसी बौद्ध को इस कारण मारा जा सकता है कि वह बौद्ध है। नहीं, लेकिन भारत में बहुसंख्यक हिन्दुओं को उसके ही एक राज्य में इस काण गोलियों से भून दिया गया क्योंकि वे हिन्दू थे। केवल यही हमले से जुड़े एक वायरल वीडियो में एक महिला ने रोते हुए कहा, "हम भेलपुरी खा रहे थे, तभी साइड से दो लोग आए, उनमें से एक ने कहा कि ये मुसलमान नहीं लगता है। इसे गोली मार दो और उन्होंने मेरे पति को गोली मार दी।" उत्तर प्रदेश के कानपुर के रहने वाले कारोबारी शुभम द्विवेदी अपनी शादी के बाद दूसरी बार पहलगाम आए थे। इस बार उन्होंने सोचा था कि परिवार के साथ जाएंगे। पत्नी और उनके परिवार के कुल मिलाकर 11 लोग जम्मू-कश्मीर के उस सुंदर इलाके में छुट्टियां मनाने गए थे। उन्हें क्या पता था कि शुभम की पहलगाम की यह दूसरी यात्रा उनकी अंतिम यात्रा बन जाएगी। आतंकवादियों ने शुभम को कलमा पढ़ने के लिए कहा। वह नहीं पढ़ पाए तो उन्हें गोली मार दी। उनकी पत्नी को ये कहते हुए छोड़ दिया कि वो जाकर सरकार को बताएं कि आतंकियों ने क्या किया है।

न्यूज एजेंसी पीटीआई को एक पीड़ित महिला ने बताया, "मेरे पति को सिर पर गोली मारी गई। उन्हें मुसलमान न होने की वजह से गोली मारी गई।" महाराष्ट्र के पुणे की आसावरी पहलगाम में घूमने आई थी। न्यूज चैनल आजतक को उन्होंने बताया, "हमलावरों ने सिर्फ पुरुषों को निशाना बनाया। खासतौर पर उन्होंने हिंदुओं को जबरन कलमा पढ़वाने की कोशिश की। जो नहीं पढ़ पाए, उन्हें गोली मार दी। मेरे सामने मेरे पापा को तीन गोलियां मारी।"

- शेष पृष्ठ 7 पर

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर विशेष

आर्य समाज के स्थापना की पृष्ठभूमि

आर्य समाज की स्थापना की पृष्ठ भूमि के संबंध में विचार करते हुये, उपस्थित हुये तत्कालीन एक दो प्रसंगों का उल्लेख कर देना अप्रासंगिक न होगा। अपितु ये घटनायें भी आर्य समाज की स्थापना की पृष्ठभूमि को परिष्कृत करने में बड़े महत्व के भाग बन गई है। नाना प्रकार के अवैदिक सांप्रदायिक मत-मतान्तरों के दिगन्त व्यापक फैले हुये अज्ञाना-अन्धकार में फंसकर धर्माचार्य और उनसे पुरष्कृत विद्वन्मंडल वेद के विषय में कितना ज्ञान रखते थे, इन दो प्रसंगों के अवलोकन से उस पर उत्तम प्रकाश पड़ेगा। वेद के विषय में गोस्वामी तुलसीदास का यह कथन अक्षरस: चरितार्थ होता है-

"हरित भूमि तृण संकुल,
समुझि परत नहि पंथ।
जिमि पाखण्ड विवाद से,
लुप्त हों हि सग्रंथ।।"

काशी शास्त्रार्थ:- सं. 1926 कार्तिक शुक्ल 12 मंगलबार ता. 17 नवम्बर 1869 समय दोपहर के ३ बजे शिवजी के त्रिशूल पर बसी हुई कही जाने-वाली इतिहास प्रसिद्ध वाराणसी नगरी में वेदसे मूर्तिपूजन सिद्ध करने के संबंध में एक महती विचार सभा हुई। उक्त सभा के सभापति स्वयं काशी नरेश थे। एक पक्ष में श्री. स्वा. विशुद्धानन्दजी, श्री. पं. बाल शास्त्री के नेतृत्व में लगभग 300 काशीस्थ पंडितों की मंडली थी, विरुद्ध में एकाकी महर्षि स्वा. दयानन्द सरस्वती थे। विचार प्रसंग में एक श्री. पं. माधवाचार्य ने गृह्यसूत्र के दो पन्ने निकालकर सामनें रक्खे और उन्ही को वेद मंत्र बताया।

वेद के विषय में गोस्वामी तुलसीदास का यह कथन अक्षरस: चरितार्थ होता है-

"हरित भूमि तृण संकुल, समुझि परत नहि पंथ।
जिमि पाखण्ड विवाद से लुप्त हों हि सग्रंथ।।"

काशी शास्त्रार्थ:- सं. 1926 कार्तिक शुक्ल 12 मंगलबार ता. 17 नवम्बर 1869 समय दोपहर के ३ बजे शिवजी के त्रिशूल पर बसी हुई कही जाने-वाली इतिहास प्रसिद्ध वाराणसी नगरी में वेदसे मूर्तिपूजन सिद्ध करने के संबंध में एक महती विचार सभा हुई। उक्त सभा के सभापति स्वयं काशी नरेश थे। एक पक्ष में श्री. स्वा. विशुद्धानन्दजी, श्री. पं. बाल शास्त्री के नेतृत्व में लगभग 300 काशीस्थ पंडित की मंडली थी, विरुद्ध में एकाकी महर्षि स्वा. दयानन्द सरस्वती थे। विचार प्रसंग में एक श्री. पं. माधवाचार्य ने गृह्यसूत्र के दो पन्ने निकालकर सामनें रक्खे और उन्ही को वेद मंत्र बताया।

प्रस्तुत लेख आर्य समाज (काकड़वाड़ी) मुम्बई के शताब्दी दर्शन स्मृति ग्रन्थ (1875-1975) में प्रकाशित हुआ है। आज आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के अवसर पर साभार रूप में समस्त सुधी पाठकों के संज्ञान और स्वाध्याय हेतु यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। - सम्पादक

इस से विदित होता है कि उस समय और ब्राह्मण आदि आर्ष ग्रंथों के संबंध में कितनी अज्ञानता और भ्रान्ति फैली हुई थी। अस्तु ।

इस विचार महासभा का जो परिणाम हुआ वह तत्कालीन समाचार पत्र बहुत देर तक श्री. के स्थापना स्वामी दयानन्दजी के पक्ष के समर्थन और काशीस्थ पंडितों के अपंडितोचित व्यवहार के संबंध में टीका टिप्पणी करते रहे।

यह काशी शास्त्रार्थवाद को पुस्तक रूप में छपकर प्रकाशित हुआ।

2. दूसरी घटना इसी बम्बई नगर की है। सन्. 1862 में बम्बई हाइकोर्ट में एक बड़े महत्व का मानहानि का मुकद्दमा चला था जो "महाराज-लाइवल केस" के नाम से प्रसिद्ध हुआ था। "सत्यप्रकाश" समाचार पत्र के संपादक ने वल्लभाचार्य और उनकी शिक्षा और आचार व्यवहार की आलोचना करते हुये उक्त संप्रदाय के तत्कालीन आचार्य की आंतरिक लीलाओं पर लेख प्रकाशित किया था। गोस्वामी संप्रदाय के आचार्य ने मान हानि का मुकद्दमा चलाया और अपने संप्रदाय का मूल आधार वेद पुराण और धर्म शास्त्र को अपने बयान में लिखाया था कि जिरह के समय (प्रतिवाद के प्रश्न के समय) वे वेदों और उन के ब्राह्मणों के नाम भी ठीक-ठीक नहीं बता सके। मानहानि का दावा खारिज हो गया, "सत्य प्रकाश" की जीत हुई।

इस घटना को लेकर पुष्टि मार्ग संप्रदाय के अनुयायियों में संप्रदाय के प्रति बहुत कौतूहल और निराशा उत्पन्न हुई।

इस मुकदमे के दौरान में पुष्टि मार्ग की आन्तरिक लीलाओं की पोल खुलकर जब बाहर आन्तरकि लीलाओं की पोल खुलकर जब बाहर आई तो ईसाई मिशनरियों ने अपने धर्म प्रकार में उसका खूब उपयोग किया और डॉं. विलशन आदि डॉ. विलशन आदि इसाई पंडितों ने इस सम्बंध में बड़े-बड़े ग्रंथ लिखे। यह मुकदमा लगभग 10 वर्ष तक चलता रहा।

इधर 'लाइवल केस' के गिर जाने से तथा प्रसिद्ध काशी शास्त्रार्थ की चर्चा वर्तमान पत्रों तथा व्यापार संबंधी आने-जाने वालों और निजी पत्र व्यवहार आदि साधनों द्वारा बम्बई में भी प्रसारित हो जाने से यहां के धार्मिक एवं सामाजिक सुधारवादी सुधीजनों में श्री महर्षि के विचारों के प्रति कौतूहल बढ़ने लगा। श्री स्वामीजी महाराज के विद्वत्तापूर्ण भाषणों को जो वर्तमान पत्रों में छपते थे बड़े चावके साथ लोग पड़ते और आपस में तथा अपने मित्र मंडल में उसकी चर्चा भी करते थे। इस प्रकार संवत् 1972-73 में बम्बई नगर में धार्मिक और सामाजिक सुधार का आन्दोलन तेजी पर चलता रहा; उसमें उत्तर पूर्व में चल रहे श्री महर्षि के व्याख्यान और शास्त्रों के समाचार बड़े महत्व की सहायता दे रहे थे।

यह भी एक योगानुयोग की बात है कि श्री स्वामीजी महाराज भी जबलपुर मध्य प्रदेश और नासिक आदि नगरों का भ्रमण और भाषण तथा शास्त्रार्थ भी करते हुये बम्बई में आ विराजे। यह समय सं. 1930 का कार्तिक मास अथवा 1874 ई. का नवम्बर मास था। महाराज ने बम्बई आने की सूचना पत्र द्वारा अपने पूर्व परिचित श्री. पं. जय कृष्ण जीवन राम व्यास को दे दी थी। बम्बई पहुंचने पर श्री. शेठ लक्ष्मीदास खीमजी, भाटिया सुधारक श्री. शेठ मथुरादास लवजी, श्री. शेठ छवीलदास लल्लुभा, श्री. शेठ जीवन दयाल, श्री. पं. सेवकलाल कृष्णदास, श्री. शेठ लीलाधर हरी आदि महानुभावों ने महर्षि का भावभरा स्वागत किया और उनके निवास के लिये नगर के कोलाहल

- शेष पृष्ठ 7 पर

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है। सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक के भारतवर्ष का वैभव काल

वर्ण व्यवस्था में गड़बड़ी से पतन का आरम्भ

गतांक से आगे -

आइए इन्हें कुछ उदाहरणों से समझते हैं, इन्हें गहराई से समझिए क्योंकि यहीं से हमें वह जानकारी मिलेगी, कि क्यों हम गुलाम हुए और कैसे वापस वो वैभव-गौरव हमें पुन: प्राप्त करना है—

पिछले अध्याय में हमने बताया था कि राजा और प्रजा सभी के बालक एक ही गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करते थे। राजा का पुत्र राज्य का उत्तराधिकारी तभी बन सकता था जब वो क्षत्रिय वर्ण का घोषित हो। क्षत्रिय वर्ण का घोषित करना गुरुकुल के आचार्यों का काम था। परीक्षा के उपरान्त योग्यताएं देखकर ही चार वर्णों को योग्य घोषित किया जाता था। एक तरह से कहा जाए तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, आदि जाति नहीं उपाधि ही हुआ करती थी।

राजगुरु/आचार्यों का जीवन बहुत ही उच्च मापदण्डों का था। वे बड़े से बड़े लालच में आकर कभी भी अपने धर्म (जिम्मेदारी/कर्त्तव्य) से च्युत (अलग) न होते थे, डिगते नहीं थे। राजगुरु, ब्राह्मण वर्ण से होते थे उनके स्वयं के पुत्र-पुत्री भी ब्राह्मण तभी घोषित हो सकते थे जब वे निर्धारित परीक्षा, उच्चतम योग्यता से उत्तीर्ण करें और गुरुकुल के आचार्य उनके आचार-व्यवहार की परीक्षा करके उन्हें ब्राह्मण वर्ण आबंटित करें।

इस व्यवस्था में आई खराबी को एक उदाहरण के साथ समझिए— किसी राजा का पुत्र मोह जागा, उनको सूचना मिली कि उसका सुपुत्र पढ़ने-पढ़ाने, शस्त्र संचालन, युद्ध कला में निपुण नहीं है और अनुमान है कि उसको क्षत्रिय वर्ण नहीं दिया जा सकेगा। उसको चिन्ता हुई, कि यदि उसके पुत्र को क्षत्रिय वर्ण नहीं मिला तो उसका पुत्र राजा बनने की निर्धारित योग्यता नहीं पा सकेगा। उसने चुपके से गुरुकुल के आचार्य से बातचीत की और अपने पुत्र को अयोग्य होने पर भी क्षत्रिय वर्ण दिए जाने के बदले पर्याप्त सोना-चांदी और भूमि देने का प्रस्ताव रखा।

समय परिवर्तित हो रहा था, शायद दुर्दिन इन्तजार कर रहे थे, गौरवशाली काल समाप्ति की ओर था। उन आचार्य को भी लालच आ गया और अयोग्य होने पर भी राजा के पुत्र को क्षत्रिय वर्ण का घोषित कर दिया गया। यहां तीन बड़ी हानियां हुईं—

(1) अयोग्य व्यक्ति के शासक बनने का गलत मार्ग खुला।

(2) मेहनत और पढ़ाई के बिना भी उच्च वर्ण प्राप्त किया जा सकता है, इस विचार की शुरुआत हुई।

(3) जो गुरुकुल के आचार्य बिना किसी लालच के, वर्ण देने के लिए केवल योग्यता को ही वरीयता देते थे, उनको इस एवज में धन और सम्पत्ति का लोभ पैदा हो गया।

- क्रमश:

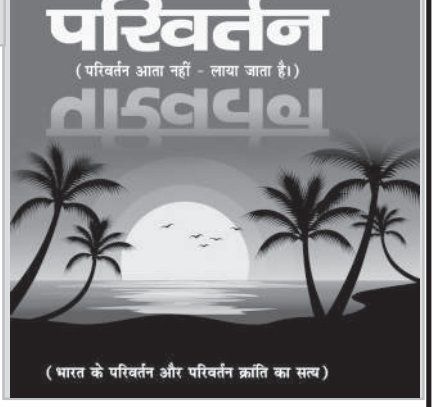

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगिन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

150वें स्थापना वर्ष पर वाराणसी में सनातन वैदिक धर्म महोत्सव एवं आर्य महासमागम

आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास से प्रेरणा ले युवा शक्ति - विनय आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष एवं आर्य समाज स्थापना के 150वें वर्ष के अवसर पर वाराणसी जिला आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गंगा के सुरम्य तट पर स्थित "संत रविदास मंदिर" भैरोघाट पर 11 से 13 अप्रैल 2025 तक तीन दिवसीय वैदिक धर्म महोत्सव हर्षोल्लास से संपन्न हुआ। इस तीन दिवसीय महोत्सव में देश के कोने-कोने से आर्य संन्यासी, वैदिक विद्वान और आर्य नेतागण उपस्थित रहे। दिनांक 11 अप्रैल को आर्य समाज तथा आर्यवीर दल का विकास विषय पर गहन चिंतन-मनन किया गया। आर्य वीरांगना और आर्यवीर दल के व्यायाम प्रदर्शन को देखकर उपस्थित जन समूह भाव विभोर हो गया। 13 अप्रैल को नारी सम्मेलन मानव निर्माण में संस्कारों का महत्व और संस्कार विधि की उपयोगिता, सनातन धर्म के उत्थान में नारी की राष्ट्रीय एवं सामाजिक भूमिका, व्यक्ति और राष्ट्रीय उत्थान में आर्यवीर और वीरांगना दल का महत्व विषय पर विचार प्रस्तुत किये गये। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी वेदामृतानंद जी (हरिद्वार), श्री दीनदयाल जी गुप्ता, श्री विनय आर्य जी, डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री जी, डॉ. नंदिता शास्त्री जी, श्री आनंद आर्य जी, श्री ओम प्रकाश आर्य जी एवं अनेक अन्य विद्वान और अतिथगणों ने प्रेरक उदबोधन दिये। प्रतिदिन यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों के कार्यक्रमों से उपस्थित जन समूह लाभान्वित हुआ। श्री विनय आर्य जी ने अपने उदबोधन में आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास को आधार बनाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से आर्य महापुरुषों, आर्य बलिदानियों के महान व्यक्तित्व और कृतित्व का वर्णन करते हुए बताया कि आर्य समाज एक आंदोलनकारी संगठन है, जो हमेशा सामाजिक कुरीतियों और ढोंग, पाखण्ड के खिलाफ 150 वर्षों से आवाज उठाता आ रहा है। बनारस की यही धरती है जहां से महर्षि ने वेदों के आधार पर शास्त्रार्थ करके वैदिक धर्म का ध्वज विश्व पर फहराने का संदेश दिया था और आर्य समाज की स्थापना का भी आगाज यहीं से हुआ था। आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष पर दिल्ली में अक्टूबर के महीने में एक विशाल, विराट और भव्य आयोजन होगा, जिसमें सम्पूर्ण विश्व के आर्यजन सहभागी बनेंगे अत: आज से ही इसकी तैयारी आरम्भ करें।

आचार्या दिव्य किरण जी के ब्रह्मत्व तथा पाणिनि कन्या महाविद्यालय की ब्रह्मचारिणीयों के मंत्र पाठ द्वारा यज्ञ हुआ। कार्यक्रम का संचालन वाराणसी जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रमोद आर्य जी ने किया तथा प्रधान जी ने सभी का धन्यवाद व्यक्त किया।

- संयोजक

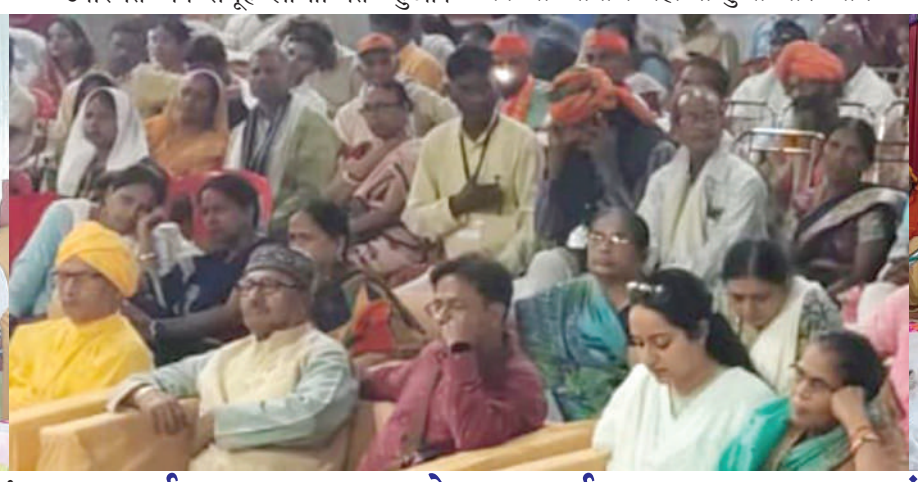

आर्य समाज मानसरोवर पार्क शाहदरा का 40वां वार्षिकोत्सव संपन्न

आर्य समाज में हुई बाल आर्यसमाज की स्थापना

आर्य समाज मानसरोवर पार्क, शाहदरा दिल्ली में 18 अप्रैल से 20 अप्रैल तक चले 40वें वार्षिकोत्सव में यज्ञ, भजन व प्रवचन के कार्यक्रम हुए, जिसमें गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान प्रोफेसर सत्यदेव निगमालंकार जी ने आर्य समाज के कार्यों व भावी योजनाओं से परिचय कराया। साथ ही उन्होंने बाल आर्य समाज की स्थापना भी मानसरोवर आर्य समाज में की। जिसमें आठ बाल सदस्य मनोनीत किए गए। कार्यक्रम में रोहतास नगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री जितेंद्र महाजन जी ने कहा कि आर्य समाज सदा से ही राष्ट्र को सर्वोपरि रखते हुए राष्ट्र उत्थान का कार्य करता रहा है। निगम पार्षद चंद्र प्रकाश शर्मा जी ने भी आर्य समाज द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। कार्यक्रम में श्री कपिल देव त्यागी, श्री फूलचंद आर्य श्रीमती विचित्र वीर, श्रीमती दीपा त्यागी, श्री रोहित आर्य आदि 200 से अधिक सदस्यों ने कार्यक्रम में भाग लिया। -*डॉ. संदीप उपाध्याय, मन्त्री*

आर्यसमाज की 150वीं वर्षगांठ पर वैदिक संस्कृति को समर्पित प्रश्नोत्तरी व सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न

आर्य समाज सूरजमल विहार एवं आर्य समाज मानसरोवर पार्क के संयुक्त तत्वावधान में आर्य समाज की स्थापना की 150वीं वर्षगांठ पर 12 अप्रैल 2025 (पूर्णिमा) को प्रश्नोत्तरी व सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुआ। वैदिक मंत्रोच्चारण और महामृत्युंजय मंत्र से सामूहिक आहुतियाँ दी गईं। ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी का अंतिम चरण मंच पर लाइव प्रस्तुत किया गया। यह शृंखला कुल 50 प्रश्नों पर आधारित थी, और सप्ताह में तीन दिन मंगलवार, बृहस्पतिवार, शनिवार को दोपहर 2:00 से 4:00 बजे के बीच प्रश्न पूछे जाते थे, इसमें देशभर से सभी आयु वर्ग के प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले और अन्य प्रतिभागियों को सराहना पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

श्रीमती सुषमा अग्रवाल, एसोसिएट प्रोफेसर, श्रीमती संगीता वाइस प्रिंसिपल, श्रीमती सिम्मी चुग वरिष्ठ अध्यापिका, पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल एवं आर्य समाज रोहतास नगर की प्रधान श्रीमती विजय रानी शर्मा आदि उपस्थित रहीं। कार्यक्रम डॉ. अंजली चुग एवं श्रीमती विचित्रवीर के संयुक्त संचालन में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से हुआ। कार्यक्रम के अंत में आयोजकों ने सभी प्रतिभागियों, दर्शकों, अतिथियों एवं सहयोगियों का हृदयपूर्वक धन्यवाद ज्ञापित किया और आर्य समाज के वैदिक आदर्शों को समाज में आगे बढ़ाने की संकल्पना को दोहराया गया। - *अशोक गुप्ता, प्रधान*

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

प्रथम पुरस्कार : 1 लाख रुपये एवं विशेष उपहार।
द्वितीय पुरस्कार : 51 हजार एवं विशेष उपहार (2)
तृतीय पुरस्कार : 31 हजार एवं विशेष उपहार (3)
चतुर्थ पुरस्कार : 5100/- एवं विशेष उपहार (25)
पांचवा : नकद 2100/- रुपये (100)
छठा : नकद 1000/- रुपये (250)
7वां : नकद 500/- रुपये (250)

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

नियम व शर्तें –

1. इस प्रतियोगिता में अधिकतम 18 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। सभी प्रश्नोत्तर इसी कॉमिक पुस्तिका में हैं।

2. उत्तर पत्र पूर्ण रूप से भरकर दिए गए कॉलम में अपना व विद्यालय का पूरा नाम व पता (पिन कोड सहित), फोन नम्बर, आयु, अवश्य भरें तथा पते के अन्त में राज्य का नाम अवश्य लिखें। (यदि विद्यालय के माध्यम से भाग न ले रहे हों तो सम्बन्धित संस्था का नाम अवश्य भरें। जैसे गुरुकुल, आर्य समाज, आर्यवीर दल की शाखा आदि।)

3. प्रश्नपत्र को भरकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001'** के पते पर (प्रश्नोत्तरी को फोल्ड करके लिफाफे में) भेजें अथवा विद्यालय/संस्था की ओर से सभी प्रश्न उत्तर के साथ कॉमिक एकत्रित करके भी भेजे जा सकते हैं।

4. दिनांक **1 सितम्बर 2025** से पूर्व प्राप्त होने वाले उत्तर पत्र ही प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। यह तिथि आगे बढ़ाने का अधिकार संयोजक का होगा।

5. उत्तर पत्रों की पूर्ण जांच के पश्चात् सभी ठीक उत्तर वाले पत्रों को पुरस्कार योजना में सम्मिलित किया जाएगा। पुरस्कार संयोजक समिति द्वारा बनाई गई तीन सदस्यीय निर्णायक समिति द्वारा अन्तिम रूप से घोषित किया जाएगा।

6. निर्णायकों की समिति का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा तथा उसे कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकेगी।

7. पुरस्कृत/विजेता बच्चों के नाम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **'साप्ताहिक आर्यसन्देश'** में दिए जायेंगे तथा पृथक पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा एवं बच्चों के नाम सभा द्वारा संचालित वेबसाइट **www.thearyasamaj.org** पर प्रदर्शित किये जायेंगे।

8. सभी पुरस्कार **'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2025'** में दिल्ली के अवसर पर प्रदान किए जायेंगे जिसकी सूचना विजेताओं को अग्रिम भेजी जाएगी। यह योजना हिन्दी तथा अन्य भाषाओं की कॉमिक पर समान रूप से लागू होगी।

9. इस कॉमिक को सुरक्षित रखें क्योकि प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार लेने हेतु कॉमिक की प्रति लाना / भेजना अनिवार्य होगा। – ***संयोजक***

भारतीय डाक India Post

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती

स्मृति डाक टिकट

समस्त आर्य संस्थाएं अधिक से अधिक खरीदकर करें प्रयोग करें

सरकार द्वारा जारी किए जाने वाले स्मृति डाक टिकट सीमित संख्या में और एकमुश्त केवल बार ही प्रकाशित किए जाते हैं। अत: समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य संगठनों, विद्यालयों, गुरुकुलों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं से निवेदन है कि अपने पास स्मृति रूप में डाक टिकट रखने तथा जन साधारण में प्रचार-प्रचार के लिए अधिकाधिक संख्या में खरीदकर प्रचार करें, अपने दैनिक पत्र-व्यवहार, स्पीड पोस्ट, रजिस्टर्ड डाक आदि में प्रत्येक स्थान पर उपयोग करें, जिससे कि हजारों-लाखों आखों और हाथों से होते हुए यह प्रचारित हो और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म वर्ष की स्मृति रूप में सुरक्षित रहे। आप अपनी संस्था के लिए जितनी डाक टिकटें प्राप्त करना चाहते हैं, कृपया उसकी संख्या के अनुसार अपनी सहयोग राशि 5/- प्रति डाक टिकट की दर से निम्नांकित बैंक खाते में जमा करा दें या राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते भेजें।

Delhi Arya Pratinidhi Sabha
A/c No. : 2009257009039 IFSC :CNRB0002009
Canara bank New Delhi Branch

यह डाक टिकट
ऑनलाइन
घर बैठे प्राप्त करें सम्पूर्ण भारत में होम डिलीवरी की सुविधा
vedicprakashan.com
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का ऑनलाइन स्टोर
96501 83336

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर विशेष

मेरा आर्यसमाज
एक संगठन नहीं, जीवन का सार

आर्यसमाज... एक नाम नही, एक क्रांति है।
यह कोई सीमित संगठन, संस्था या
भवन मात्र नही, अपितु एक जीवन-दर्शन है।
एक ऐसी ओजस्वी विचारधारा
जो मनुष्य की अंतरात्मा को झकझोर कर,
उसे आत्मबल, सांस्कृतिक गौरव,
जीवन के उच्च आदर्शों और राष्ट्र की सेवा में
समर्पित महान व्यक्तित्व में रूपांतरित करती है।

आर्यसमाज वह स्थान है,
जहाँ जीवन केवल जिया नहीं जाता, गढ़ा जाता है।
यहाँ बच्चों को सिर्फ पुस्तक ज्ञान नहीं,
बल्कि संस्कारों की नींव दी जाती है।
जहाँ वेदों की ऋचाएं पाठ नहीं, प्रेरणा बनती हैं।
जहाँ हर प्रार्थना एक आत्म-संवाद है,
और हर यज्ञ एक सामाजिक संदेश।
आर्यसमाज का उद्देश्य केवल धार्मिक आडंबरों से ऊपर उठना नहीं है, बल्कि जीवन को वैदिक मूल्यों के अनुसार ढालना है।

यहाँ सिखाया जाता है, सत्य को केवल बोलना नहीं,
जीना कैसे है, क्योंकि सत्य ही वह दीपक है
जो अंधकारमय जीवन को प्रकाश देता है।
धर्म का पालन केवल रीति-नीति से नहीं,
अंतरात्मा की पुकार से कैसे हो,
जिससे जीवन में न्याय, करुणा और संतुलन बना रहे।
कर्तव्य और सेवा में केवल कर्तव्यबोध नहीं,
परम आनंद की अनुभूति कैसे हो,
क्योंकि निष्काम सेवा ही सच्चा योग है,
और यही आत्मिक उन्नति का मार्ग है।

यहाँ 'ईश्वर' कोई डर नहीं, अपना मार्गदर्शक होता है।
आर्यसमाज आरम्भ से ही पाखंडों से मुक्त
समाज के निर्माण में लगा हुआ है।
चाहे वह जात-पात का बंधन हो, मूर्ति पूजा का
अंधविश्वास हो, या सामाजिक कुरीतियाँ।
आर्यसमाज ने हर मोर्चे पर तर्क,
विज्ञान और वेद-आधारित दृष्टिकोण से
बदलाव लाने का काम किया है।

यह जीवन दर्शन केवल व्यक्तिगत उन्नति की बात नहीं करता, बल्कि "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" पूरे विश्व को आर्य बनाने का सपना देखता है।
आर्यसमाज के विचारों से प्रेरित व्यक्ति केवल
एक अच्छा नागरिक नहीं, बल्कि राष्ट्र के लिए
समर्पित एक योद्धा बनता है।
जिसके हृदय में भारत माता के प्रति निस्वार्थ प्रेम,
और उसके उत्थान के लिए अटल संकल्प होता है।

मेरा आर्यसमाज मेरा गर्व है।
यह वह दीप है, जिसने मेरे जीवन को उजास दिया।
अब मेरा दायित्व है कि मैं भी
इस दीप से हज़ारों और दीप जलाऊँ।
संस्कारों की लौ को, वेदों की ज्योति को,
और राष्ट्रप्रेम की अग्नि को हर हृदय तक पहुँचाऊँ।

क्योंकि आर्यसमाज कोई संस्था नहीं
यह तो जीवन की परिभाषा है
और मैं इसका एक छोटा सा,
लेकिन समर्पित साधक हूँ।

– कीर्ति शर्मा, प्रधान
आर्यसमाज, करोल बाग, दिल्ली

साप्ताहिक स्वाध्याय

जीवन का अन्तिम दृश्य

गतांक से आगे-

अनेक प्रान्तों में, सैकड़ों मीलों की दूरी पर बैठे हुए रईस और समृद्ध महानुभावों के कार्य पर कड़ा निरीक्षण करने की जितनी आवश्यकता थी, आर्य-पुरुष उसे पूरा न कर सके। ये अपनी प्रतिनिधि सभाओं और धीरे-धीरे सार्वदेशिक सभा में इतने लीन हो गए कि परोपकारिणी की सुध न ली। परोपकारिणी भी अनुकूल अवसर जानकर स्वप्नावस्था में पड़ी-पड़ी जीवन के दिन काटने लगी।

उदयपुर में महर्षि जी 1883 ईसवी के फरवरी मास के अन्त तक रहे। मार्च के प्रारम्भ में आप शाहपुरा रियासत की राजधानी में पहुंच गए। शाहपुराधीश राजा नाहरसिंह जी महर्षि जी के भक्तों में से थे। उन्होंने बड़े भक्ति भाव से स्वागत किया। अपने विशेष बाग नाहर निवास में महर्षि जी का आसन जमाया। प्रतिदिन वैदिक धर्म का प्रचार होने लगा। महाराज स्वयं प्रतिदिन सायंकाल 3 घण्टे के लिए शिष्य-भाव से आते थे, और अध्ययन करते थे। मनुस्मृति, योग- दर्शन, वैशेषिक दर्शन आदि के आवश्यक भागों का महाराज ने पाठ समाप्त कर लिया।

महर्षि जी के उपदेशों से प्रेरित होकर महाराज ने महलों में एक यज्ञशाला बनवाई, जिसमें प्रतिदिन हवन कराने का संकल्प किया। मई मास के मध्य तक शाहपुरा में धर्मवृष्टि करके महर्षि 17 मई 1883 को जोधपुर की ओर रवाना हुए। शाहपुरा से जोधपुर की ओर रवाना होने के समय महाराज नाहरसिंह ने महर्षि जी से कहा कि 'महाराज! आप जोधपुर तो जाते हैं, परन्तु वहां वेश्या आदि का खण्डन न करना।' महर्षि ने उत्तर दिया कि 'राजन! मैं बड़े वृक्ष को नहेरने से नहीं काटता, उसके लिए बड़े शस्त्र की आवश्यकता होगी।'

जोधपुर में कर्नल सर प्रतापसिंह और रा० रा० तेजसिंह आदि रईस महर्षि के शिष्य हो चुके थे। वे लोग देर से निमन्त्रण भेज रहे थे। अब समय पाकर महर्षि ने जोधपुर राज्य में भी सुधार का बीड़ा उठाने का संकल्प किया। शाहपुरा से आप अजमेर आए और वहां से जोधपुर के लिए रवाना हुए। अजमेर के आर्य-पुरुषों ने महर्षि की सेवा में उपस्थित होकर फिर निवेदन किया कि 'अब आप मारवाड़ प्रान्त में पधारते हैं। वहां के मनुष्य प्राय: गंवार और उजड्ड हैं, और उनका स्वभाव और बर्ताव भी अच्छा नहीं। इसलिए अभी आप वहां न जाइए।' महर्षि ने उत्तर दिया कि 'यदि लोग मेरी अंगुलियों की बत्तियां बनाकर जलावें, तब भी मुझे कुछ शंका नहीं हो सकती। मैं वहां जाऊंगा और अवश्य वैदिक धर्म का प्रचार करूंगा।'

इस उत्तर को सुनकर सब चुप हो गए, परन्तु एक सज्जन ने निवेदन किया कि तथापि आप वहां सोच-समझकर और मधुरता से काम लेना, कारण यह है कि वहां के रहने वाले कठोर हृदय और कपटी होते हैं।' इसका उत्तर महर्षि ने दिया कि 'मैं पाप के बड़े-बड़े वृक्षों की जड़ काटने के लिए तीक्ष्ण कुठारों से काम लूंगा, न कि उन्हें बढ़ाने के लिए कैंचियों से उनकी कलम करूंगा।'

जोधपुर में महर्षि जी का भली प्रकार स्वागत हुआ। राजा जवानसिंह जी ने आवभगत की। बाद में महाराजा प्रतापसिंह और रा० रा० तेजसिंह आदि रईसों ने दर्शन किये और आतिथ्य का उचित प्रबन्ध किया। कुछ दिनों पीछे स्वयं जोधपुराधीश महाराज यशवन्तसिंह भी दर्शनों को आए। महर्षि ने उन्हें बहुत उपदेश दिया। प्रतिदिन सायंकाल को महर्षि जी सर्वसाधारण को धर्मोपदेश करते और फिर दो घण्टे तक राजभवन में जाकर महाराज तथा उनके अन्य समीपवर्तियों की शंकाओं का निवारण करते। महाराज प्रतिदिन महर्षि से कुछ-न-कुछ सीखते थे। महर्षि ने अपने व्याख्यानों में मूर्तिपूजा, वेश्यागमन, चक्रांकित सम्प्रदाय और इस्लाम का बड़े जोर से खण्डन किया। जोधपुर में यही शक्तियां थीं। जोधपुर के पुजारी बड़े प्रचण्ड थे। महाराज और रईसों पर वेश्याओं का पूरा अधिकार था। रियासत में चक्रांकितों का बड़ा जोर था और राज्य

के मुसाहिब आला भय्या फैजुल्ला खां इस्लाम के खण्डन से बहुत क्षुब्ध हो गए थे। एक रोज उन्होंने महर्षि जी को यहां तक कह दिया कि यदि इस समय मुसलमानों का राज्य होता तो आप ऐसे व्याख्यान न दे सकते, और देते तो जीवित नहीं रह सकते थे। महर्षि जी ने उसका उत्तर दिया- अस्तु, कोई बात नहीं है।

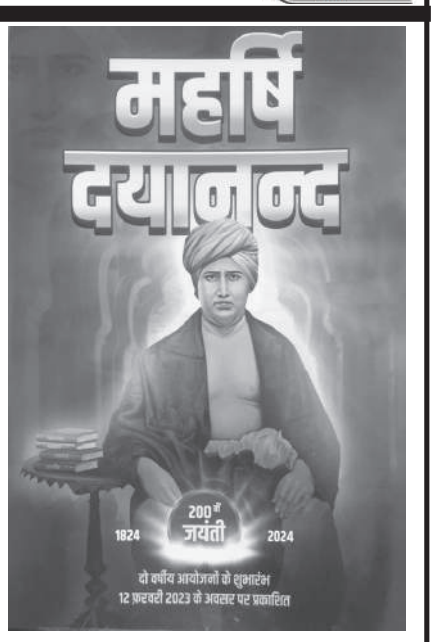

-क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Last scene of Life

Arya-purush could not fulfill the need of strict supervision over the work of noble and prosperous noblemen sitting at a distance of hundreds of miles in many provinces. They got so engrossed in their representative assemblies and gradually in the Universal Assembly that they did not take care of the charity. Knowing the favorable opportunity, the philanthropist also started spending the days of its life lying in a dream state.

Swamiji stayed in Udaipur till the end of February 1883 AD. In the beginning of March he reached the capital of the princely state of Shahpura. Shahpuradhish Raja Naharsingh ji was one of the devotees of Swami ji. He welcomed him with great affection. Swami ji's seat was established in his special Bagh Nahar residence. Vedic religion started being propagated everyday. Maharaj himself used to attend every evening for 3 hours with disciple-like attitude, and used to study. Maharaj had learnt reciting the essential parts of Manusmriti, Yoga-Darshan, Vaisheshik Darshan etc.

Inspired by Swami ji's teachings, Maharaj got a Yagyashala built in the palaces, in which he resolved to perform Havan everyday. By the middle of May, the sage left for Jodhpur on May 17, 1883, after doing religious rituals in Shahpura. At the time of leaving from Shahpura towards Jodhpur, Maharaj Nahar Singh said to Swamiji, 'Maharaj! You do go to Jodhpur, but don't condemn prostitutes etc. there. The sage replied, ''Rajan ! I don't cut a big tree by sight, for that a big weapon will be needed.''

In Jodhpur, Colonel Sir Pratap Singh and Rao Tej Singh etc. had become disciples of Rishi. They had been inviting Swamiji for a long time. Now after getting time, the sage resolved to take up the cause of reform in the state of Jodhpur as well. From Shahpura he came to Ajmer and from there left for Jodhpur. The Arya-men of Ajmer attended the service of the sage and again requested to not to visit Marwar province. The people there are often boorish and wasteful, and their nature and behavior are also not good. That's why you should not go there now.'' The sage replied that ''Even if people make lights of my fingers and light them, I can't have any doubts. I will go there and will definitely propagate the Vedic religion.''

Everyone became silent after hearing this answer, but a gentleman requested that he should act thoughtfully and sweetly there, because the people living there are hard-hearted and deceitful. To this the sage replied that '' I will work with sharp axes to cut the roots of big trees, not with scissors to make them grow.''

Swamiji was well received in Jodhpur. Raja Jawan Singh ji welcomed. Later Maharaja Pratap Singh and Rao Rao Tej Singh etc. nobles visited and made proper arrangements for hospitality. A few days later Jodhpuradhish Maharaj Yashwant Singh himself also came to visit. The sage gave him a lot of advice. Every day in the evening, Swamiji preached to the general public and then went to the Raj Bhavan for two hours to clear the doubts of Maharaj and his close associates. Maharaj use to talk to the sage every day about something or the other. In his lectures,the sage vehe mently condemned idolatry, prost-itution, sectarianism and Islam. These were the difficulties in Jodhpur. The priests of Jodhpur were very fierce. Prostitutes had full authority over the king and the nobles. Chakrankitas were very strong in the princely state and the state's Musahib Ala Bhaiya Faizullah became very angry with the blasphemy of Islam. One day he even told Swami ji ''If there had been a Muslim rule at this time, you would not have been able to give such lectures, and if you had done so, you would not have been able to survive.'' Swami ji replied to him - ''Well, there is no problem. If I had also patted the back of two Kshatriya Rajputs at that time, they would have understood those people very well.''

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

पृष्ठ 3 का शेष

आर्य समाज के स्थापना की पृष्ठभूमि

से दूर वालकेश्वर में श्री रेवागर कुवर (प्रणामी संप्रदाय) के मठ में जो गोशाला के नाम से पुकारा जाता था, नियत किया गया। उपर्युक्त महाशयों ने सब प्रकार से आतिथ्य की व्यवस्था और वर्तमानपत्रों तथा विज्ञापनों द्वारा श्री स्वामीजी के नगर में पधारने की सार्वजनिक सूचना दे दी, और महर्षि का परिचय देते हुये विज्ञापन छपवा कर वितरित किया कि जिस किसी को धर्म और धर्मशास्त्र तथा वेद के विषय में किसी प्रकार की शंका हो श्री. स्वामीजी के निवास स्थान पर आकर उनसे वार्तालाप कर के अपनी शंकाओं का समाधान कार सकते हैं।

इसके अतिरिक्त धोबी तलाव स्थित फामजी कावसजी इंस्टीटयूट (सभाहॉल) में श्री स्वामीजी महाराज के सार्वजनिक व्याख्यान के लिये नियमित रूप से व्यवस्था की गई और स्वामीजी के प्रवचन भी होने लगे। महर्षि के विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान सुनने से तथा उनके निवास स्थान पर अनेक धर्म जिज्ञासु संत्रात लोग आकर उनसे प्रत्यक्ष वार्तालाप कारने से अनेका धर्म सुधारक अग्रणी भाटिया शेठों पर बहुत गंभीर प्रभाव पड़ा। कभी कभी पुष्टि मार्ग संप्रदाय के पुरस्कर्ता पंडित कुछ शास्त्रीय चर्चा भी करते जिनका महा पांडित्य पूर्ण उत्तर पाकर विचलित भी हो जाते थे। इन व्याख्यानों और शास्त्रार्थों का असर सांप्रदायिक मतमतान्तर पर बहुत प्रतिकूल होता था। विशेषत: पुष्टि मार्ग संप्रदाय पर। फलत: यही से भावी आर्य समाज की पृष्ठ भूमि परिष्कृत होने लगी।

महर्षि के विद्वत्ता पूर्ण और युक्ति संगत प्रवचन को सुनकर सुधार वादी सद्गृहस्थ चकित और मुग्ध हो जाते थे। परिणामत: एक दिन प्रवचन के पश्चात् रात्रि के समय कुछ सज्जनों ने महर्षि से निवेदन किया कि आपका यह पुनीत कार्य किसी संस्था वा सभा विशेष के रूप में स्थायी बन जाय तो अति उत्तम होगा ।

भक्त जनों की प्रार्थना सुनकर महर्षि ने उत्तर दिया कि आज देश में धार्मिक संस्था और पंथो की कोई कमी नही है। मैं अपनी कोई नई बात नही कहता। मैं तो वेद और शास्त्रों में प्रति-पादित बातों का ही उपदेश करता हूं। हमारे देश में 25 कोटि आर्य हैं कुछ बातों में जो आपसी मत भेद है विचार-विमर्श करने से स्वयं दूर हो जायंगे। यदि संस्था में पुरुषार्थ करके परोपकार कर सको तब तो मेरी कोई मनाही नहीं, किन्तु यदि यथोचित व्यवस्था न रखोगे तो आगे चलकर गड़बड़ाध्याय हो जायगा। मैं तो जैसा अन्यों को उपदेश करता हूं वैसे ही आप लोगों को भी करूंगा। इतना लक्ष्य में रखना कि मेरा कोई स्वतंत्र मत नहीं है, और मैं सर्वज्ञ भी नहीं हूं यदि मेरी भी कोई गलती आगे चलकर पाई जाय तो मुक्ति पूर्वक परीक्षा कार के उसे भी सुधार लेना, नही तो आगे चलकर यह भी एक मत हो जायगा। आज भारत में जितने भी मंत मतान्तर प्रचलित है, वेद शास्त्र रूपी समुद्र में मिला देने पर नवी के समान सब पुन: धर्म एक्य हो जायगा। इस से धार्मिक, सामाजिक और व्यवहारिक सुधारणा आपोआप हो जायगी ।

इस प्रकार एक संस्था को सुदृढ़ मारने का निश्चय हो गया और उस के सिद्धान्त संबंधी नियम स्वयं महर्षि ने और विधान संबंधी राव साहब दादोबा पाण्डुरंग तरखड़कर, श्री पानाचंद आनन्दजी पारेख, थी। सेवकलाल कृष्णदास आदि मिलकर तैयार किये और बम्बई हाइकोर्ट के वकील श्री गिरधरलाल दयालदास कोठारी को दिखाकर व्यवस्थित कर लिये। लगभग 60 सज्जन सभासद भी बन गये।

इस बीच बम्बई के धार्मिक आन्दोलन, महर्षि के भाषण और महा पाण्डित्यपूर्ण शास्त्रार्थ की चर्चा समाचार पत्रों द्वारा तथा पत्र व्यवहार आदि साधनों से अहमदाबाद के सुधारक सज्जनों का विदित हो जाने से और मुख्यत: "लोकहितवादी" राय बहादूर श्री गोपाल राव हरी देशमुख के विशेष आग्रह से श्री स्वामीजी महाराज अहमदाबाद जा विराजे। अहमदाबाद के प्रतिष्ठित सुधारक तया प्रार्थना समाज के संस्थापक राव साहब महिपत राम रूपराम और श्री भोलानाथ साराभाई जादि महानुभावों ने आपका स्वागत किया और व्याख्यान आदि के लिये प्रार्थना की। वहाँ श्री स्वामीजी महाराज के व्याख्यान और शास्त्रालोचन और पंडितो के साथ कुछ शास्त्रार्थ भी होते रहे।

इधर महर्षि की अनुपस्थिति में जिन सज्जनों ने भावी आर्य समाज के सभासद होने की उत्सुकता दिखलाई थी उनको धर्माचार्यों तथा पंडितो ने जातीय वहिष्कार कर देने का भय दिखाकर तथा उनके कुटुम्बी जनोंपर भी अनुचित दबाव डालकर, विचलित कर दिया था। इत्यादि कारणों से इधर बम्बई का आन्दोलन कुछ शिथिल हो गया था। किन्तु महर्षि अधिक दिन अहमदावाद में नहीं रहे, और उनके पुन: बम्बई वापस आ जानेपर आन्दोलन पूर्ववत तेज हो गया। इस पुनीत कार्य में विघन डालने वाले तो अनेक स्वार्थ पारायण लोग थे किन्तु वल्लभाचार्य के पुष्टि मार्ग के आचार्य और उनके पुरष्कृत पंडितगण विशेष रूपसे बाधक थे कारण कि उन्हीं के मतके अनेक प्रतिष्ठित अनुयायी उन से अलग होकर इस वैदिक आन्दोलन में मुख्य रूप से आगे थे।

अनेक प्रकार के अपमान जनक भय दिखाने पर श्री शेठ मथुरावास लवजी, श्री. शेठ छबीलदास लल्लुभाई, श्री. पं. सेवक लाल कृष्णदास तथा थी गिरधरलाल दयालदास कोठारी आदि अपने संकल्प पर अडिग रूप से कायम रहे।

- शेष अगले अंक में

पृष्ठ 2 का शेष

पहलगाम में आतंकियों ने की 28 ....

पहलगाम के इस आतंकी हमले में एक और दर्दनाक कहानी सामने आई है। इस आतंकी हमले में हैदराबाद में तैनात इंटेलिजेंस ब्यूरो के एक अधिकारी की मौत हुई है। मृतक मनीष रंजन भी आतंकियों की गोलीबारी की चपेट में आ गए। मनीष बिहार के रहने वाले थे। वह छुट्टी पर अपने परिवार के साथ कश्मीर गए थे। उन्हें उनकी पत्नी और बच्चों के सामने ही गोली मारी गई ।

बताया जा रहा है कि बैसरन घाटी में जहाँ हमला हुआ, इस इलाके में केवल पैदल या घोड़ों से ही पहुंचा जा सकता है। लश्कर-ए-तैयबा के एक संगठन टीआरएफ ने हमले की जिम्मेदारी ली है। लेकिन इससे अलग एक बात यह है कि इस हमले से ठीक चार दिन पहले 18 अप्रैल को पाकिस्तान अधि त कश्मीर के रावलकोट में 'लश्कर' ने एक बड़ी रैली की थी। इंडिया टुडे से जुड़े सुबोध कुमार की रिपोर्ट के अनुसार रावलकोट के खाई गाला इलाके में हुई इस रैली में खुलेआम भारत को धमकी दी गई थी। इस रैली में लश्कर के सीनियर कमांडर अबू मूसा ने भड़काऊ भाषण देते हुए कहा था कि भारत सरकार ने धारा 370 और 35 ए हटा , ताकि कश्मीर की आबादी बदली जा सके। मुस्लिम पहचान को मिटाने के लिए, बहुसंख्यक मुस्लिम को अल्प संख्यक में बदलने के लिए ऐसा किया गया। ऐड़ी-चोटी का जोर लगाया, अपने टैंकों के जरिए, तोपों के जरिए, हेलिकॉप्टर के जरिए, तुमने 10 लाख फौज तैनात कर दी। तुमने सोचा श्रीनगर, पुलवामा, पुंछ और राजौरी में राम-राम की गूंज करवाओगे।

साथ ही अबू मूसा ने कश्मीर की डेमोग्राफी बदलने का दावा करते हुए कहा था कि 52 लाख डोमिसाइल जारी किए, हाथों में कानूनी पर्ची दी मोदी ने, कि जाओ तुम्हें श्रीनगर में आबाद होना है। राम-राम की आवाज को बुलंद करना है। लश्कर-ए-तैयबा ने इस चैलेंज को कुबूल किया। मोदी, बंद अदालत में तुमने ये किया, कागज तुम्हारा था, जज तुम्हारा था, लेकिन मैदान तो मुजाहिदीन का है। आजमा कर देखो, इंशा अल्लाह, गोलियों की बौछार से हम तुम्हारी गर्दनों को भी काटेंगे और शहीदों की कुर्बानियों की लाज भी रखेंगे। अपने भाषण के आखिर में अबू मूसा ने कहा, "पांचवां साल है, ना एक कॉलोनी बना सके ना आबाद कर सके। बल्कि मोदी को जाकर कहा कश्मीर में हमारी जान को खतरा है। जब तक वहां खतरा खत्म नही होता, हम कश्मीर में आबाद होने के लिए तैयार नहीं। कश्मीर और फिलिस्तीन मसले का हल जिहाद की तलवार है।

अब देखना है कि जिहाद की इस तलवार पर भारत सरकार क्या एक्शन लेती है क्योंकि एक बार फिर इस घटना से साफ है कि इस्लामिक आतंकियों का मकसद घाटी में पर्यटन और धार्मिक गतिविधियों को बाधित करना है। दूसरा, हमले के बाद केंद्र सरकार और सुरक्षा एजेंसियों के लिए यह एक चेतावनी है। उन्होंने संदेश दिया है भारत की सरकार को। अब देखते हैं भारत सरकार लहू से सने इस संदेश का क्या करती है। क्योंकि अगर सबक नहीं सिखाया गया तो वो मजहब के नाम पर लहू पीते रहेंगे।

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए कायराना आतंकी हमले में पर्यटकों के मारे जाने और लोगों के घायल होने की ख़बर दिल दहलाने वाली है। आर्य समाज शोकाकुल परिवारों के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए और घायलों के जल्द स्वस्थ होने की ईश्वर से प्रार्थना करता है। आर्य समाज सरकार से आग्रह करता है ऐसे क्रूर दानवों के खिलाफ ठोस कदम उठाए ताकि आगे बर्बर हमले करने वाले हजार बार सोचें।

- संपादक

शोक समाचार

श्री गंगा बिशन गुप्ता जी का निधन

आर्यसमाज सुन्दर विहार, दिल्ली के उप प्रधान श्री गंगा बिशन गुप्ता जी का दिनांक 21 अप्रैल, 2025 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 22 अप्रैल को पंजाबी बाग शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 4 मई, 2025 रविवार को नत्था सिंह वाटिका, पंजाबी बाग में सम्पन्न होगी।

श्री सुनील कुमार को पितृशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य मीडिया सैन्टर के कार्यकर्ता श्री सुनील कुमार के पूज्य पिता श्री बिमलेश चौधरी जी का दिनांक 10 अप्रैल, 2025 को लोक नायक जयप्रकाश नारायण हॉस्पीटल में ब्रेन हेमरेज होने से निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पंजाबी बाग शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 21 अप्रैल, 2025 से रविवार 27 अप्रैल, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 24-25-26/04/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 अप्रैल, 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती
150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष
के ऐतिहासिक अवसर पर

साप्ताहिक आर्य सन्देश

150वां आर्यसमाज स्थापना वर्ष विशेषांक का प्रकाशन

समस्त आर्यजनों, आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं एवं सम्मापित पाठकों को जानकर हर्ष होगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर साप्ताहिक आर्य सन्देश के विशेषांक **"150वां आर्य समाज स्थापना वर्ष"** का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसमें महर्षिकृत सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथ, महषि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, सेवा कार्य, उनके जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंग, आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास, आर्य समाज द्वारा किए गए विभिन्न सफल आंदोलन, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण आदि विषयों पर शोधपरक लेख, कविताएं, रचनाएं, प्रेरक प्रसंग एवं संस्मरण आदि प्रकाशित किए जाएंगे।

अत: समस्त वैदिक विद्वानों, लेखकों, भजनोपदेशकों एवं कवि महानुभावों से निवेदन है कि उपरोक्त विषयों पर अपने मौलिक एवं अप्रकाशित लेख एवं रचनाएं प्रकाशनार्थ भेजने की कृपा करें। इसके साथ ही समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, विद्यालयों, गुरुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं, आर्य प्रतिष्ठानों और उद्योगपति परिवारों से सहयोग रूप में विज्ञापन भी सादर आमन्त्रित किए जाते हैं।

विशेषांक का आकार 23x36x8 (A4 Size) होगा एवं विज्ञापन दर निम्न प्रकार हैं -

विज्ञापन का आकार	विज्ञापन दर (रंगीन)	विज्ञापन दर (श्याम-श्वेत)
पूरा पृष्ठ	10000/- रुपये	7500/- रुपये
आधा पृष्ठ	5000/- रुपये	4000/- रुपये

इसके साथ ही **कवर पृष्ठ विज्ञापन - अन्तिम पृष्ठ हेतु 51000/-** रुपये एवं **कवर पृष्ठ 2 एवं 3 हेतु 31000/- रुपये** की की सहयोग राशि निर्धारित की गई है।

कृपया अपना विज्ञापन सहयोग एवं प्रकाशनार्थ सामग्री **'आर्य सन्देश साप्ताहिक'** के नाम **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें या **aryasandeshdelhi@gmail.com** पर ईमेल करें। - ***सम्पादक***

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक

रविवार 4 मई, 2025 सायं : 3:00 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अत्यावश्यक अन्तरंग सभा बैठक **रविवार 4 मई, 2025** को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में **सायं 3:00 बजे** से आयोजित की गई है। सभी माननीय सम्मानित अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्य मानुभावावों को बैठक का ऐजेण्डा पत्रक व्हाट्सएप्प, टेलीग्राम एवं साधारण डाक से विधिवत् भेज दिया गया है।

अत: सभी सम्मानीय सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य (प्रधान) — विनय आर्य (महामन्त्री)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह